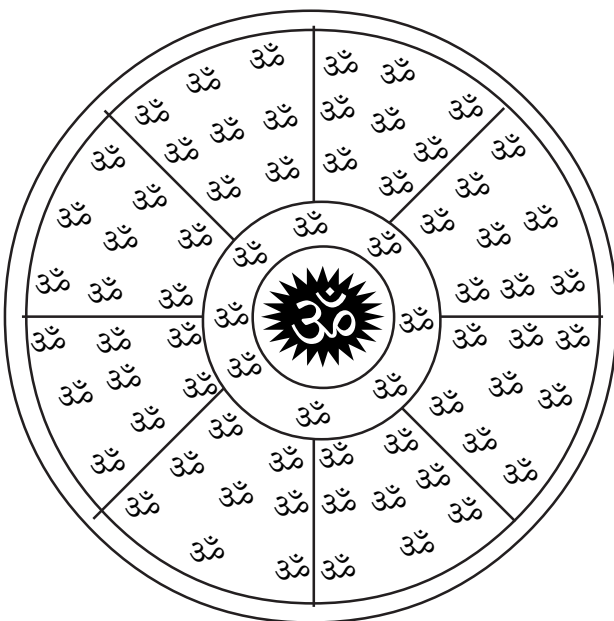


विशद  
काञ्जिका द्वादशी व्रतोद्यापन पूजा विधान

(श्री केसव सूरि कृत संस्कृत विधान के आधार पर)

मण्डल



रचयिता

प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य विशद सागर जी महाराज

—: प्रकाशक :—

विशद साहित्य केन्द्र

कृति : विशद काञ्जिका द्वादशी व्रतोद्यापन पूजा विधान

रचनाकार : परम पूज्य साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज

सहयोगी : क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी महाराज

क्षुल्लिका भक्तिभारती माताजी, वात्सल्य भारती माताजी

संयोजन : ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), ब्र. आस्था दीदी  
(9660996425), ब्र. सपना दीदी (9829127533)

ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी

संस्करण : प्रथम 2016 (1000 प्रतियाँ)

मूल्य : 15/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

सम्पर्क सूत्र :

(1) निर्मल कुमार गोधा,

2142 निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर, मो. 9414812008

(2) विशद साहित्य केन्द्र, श्री दिगम्बर जैन मन्दिर कुआँ वाल  
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा), मो. 9812502062

(3) हरीश जैन, जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू पाली  
नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली  
मो. 098181157971, 09136248971

(4) सुरेश जैन, पी-958, गली नं. 3, शान्ति नगर, दुर्गापुरा, जयपुर  
मो. 9413336017

पुण्यार्जक :

श्री राजेन्द्र प्रसाद, दिलीन कुमार जैन (बगड़ी वाले)

निवाई, जिला-टोंक (राज.), मो. 9414029253

e-mail : vishadsagar11@gmail.com

प्रकाशक : विशद साहित्य केन्द्र

मुद्रक : पिक्सल 2 प्रिंट, जयपुर, हेमन्त जैन (बड़ागाँव) मो. 9509529502

# काञ्जिका द्वादशी व्रत कथा

प्रणमूं श्री अरहन्त पद, प्रणमूं शारद माय।

श्रावण द्वादशी व्रत कथा, कहूं भव्य हितदाय।।

मालवा प्रांत में पद्मावतीपुर नामक एक नगर था, वहाँ का राजा नरब्रह्म और रानी विजयावल्लभा थी। इनके शीलवती नाम की एक अति कुरूपा, कानी कुवड़ी कन्या उत्पन्न हुई। ज्यों ज्यों वह कन्या बड़ी होती थी त्यों-त्यों माता पिता को चिन्ता बढ़ती जाती थी।

एक दिन वे राजा-रानी इस प्रकार चिन्ता कर रहे थे कि इस कुरूपा कन्या से पाणिग्रहण कौन करेगा? कि पुण्य योग से उन्हें वनमाली द्वारा यह समाचार मिला कि उद्यान में श्रवणोत्तम नाम यतीश्वर देशदेशांतरों में विहार करते हुए आये हैं। सो राजा उत्साह पूर्वक स्वजन और पुरजनों को साथ लेकर श्री गुरु की वन्दना के लिये वन में गया और तीन प्रदक्षिणा देकर प्रभु को नमस्कार करके यथा योग्य स्थान में बैठा।

श्री गुरु ने धर्मवृद्धि कहकर आशीर्वाद दिया और मुनि श्रावक के धर्म का उपदेश देकर निश्चय व्यवहार व रत्नत्रय धर्म का स्वरूप समझाया। पश्चात् राजा ने नतमस्तक हो पूछा- हे प्रभो! यह मेरी पुत्री किस पाप के उदय से ऐसी कुरूपा हुई है।

तब श्री गुरु ने कहा- अवंती देश में पांडलपुर नाम का नगर था। वहाँ का राजा संग्रामभल्ल और रानी वसुन्धरा थी। उसी नगर में देवशर्मा नामक पुरोहित और उसकी कालसुरी नाम की स्त्री थी। एक दिन यह कपिला कुमारी अपनी सखियों के साथ अठखेलियाँ करती हुई वन क्रीड़ा के लिए नगर के बाहर गई, सो वहाँ श्री परम दिगम्बर साधु को देखकर उनकी अत्यन्त निन्दा की और घृणा की दृष्टि से यह सखियों से कहने लगी देखोरी यह कैसा निर्लज्ज पापी पुरुष है कि पशु के समान नग्न फिर रहा है। लोगों को ठगने के लिए लंघन करके वन में बैठा रहता है अथवा कभी कभी ऐसा गंगा वन से वस्ती में फिरता रहता है। धिक्कार है इसके नरजन्म पाने को। इत्यादि अनेकों कुवचन कहकर मुनि के मस्तक पर धूल डाल दी और थूँक भी दिया।

अनेकों उपसर्गों के सहते हुये भी श्री मुनिराज तो ध्यान से किञ्चित्मात्र भी विचलित न हुए और समभावों से उपसर्ग जीतकर केवलज्ञान प्राप्त कर परम पद को प्राप्त हुए, परन्तु वह कपिला जिसने मदोन्मत्त होकर श्री योगीराज को उपसर्ग किया था, मरकर प्रथम नरक में गई। वहाँ से निकल कर गंधी हुई फिर हथिनी, फिर बिल्ली, फिर नागिन, फिर चांडालनी हुई और वहाँ से मरकर तुम्हारे घर पुत्री हुई

है। सो हे राजा! इस प्रकार मुनि निन्दा के पाप से इसकी यह दुर्गति हुई है।

राजा ने यह भवांतर का वृत्तांत सुनकर पूछा- हे नाथ! इसका यह पाप कैसे छूटे सो कृपाकर बताइये?

तब स्वामी ने कहा- राजा! सुनो, संसार में ऐसा कौन सा कार्य है कि जिसका उपाय न हो। यदि मनुष्य अपने पूर्व कर्मों की आलोचना, निन्दा करके आगे को उन पापों से परांगमुख होकर पुनः न करने की प्रतिज्ञा करे और पूर्व पापों की निर्जरार्थ व्रतादिक करे तो पापों से छूट सकता है।

इसलिये यह पुत्री सम्यक्त्वपूर्वक श्रावक शुक्ला द्वादशी व्रत को धारण करे तो इस कष्ट से छूट सकती है। इस व्रत की विधि निम्न प्रकार है- श्रावण सुदी एकादशी को प्रातःकाल स्नानादि करके श्री जिन पूजा करें और पश्चात् भोजन करके सामाजिक के समय द्वादशी व्रत के उपवास की धारण करे। इसी समय से अपना काल धर्मध्यान में बितावें और द्वादशी को भी नियमानुसार उठकर नित्य क्रिया से निवृत्त हो भी जिनमंदिर में जाकर उत्साह सहित पंचामृत अभिषेक कर अष्ट द्रव्य से पूजन करें अर्थात् पाठ और मंत्रों को स्पष्ट बोलकर प्रासुक अष्ट द्रव्य चढ़ावों और णमोकार मंत्र का पुष्पों द्वारा 108 बार जाप करें। समाधिक स्वाध्यायादि धर्मध्यान में काल बितावे। फिर त्रयोदशी को इसी प्रकार अभिषेक पूर्वक पूजनादि करने के पश्चात् किस अतिथि व दीन दुखी को भोजन दान करने के बाद भोजन करे। इस प्रकार एक वर्ष में, एक बार करे। सो बारह वर्ष तक करे। पश्चात् उत्साह सहित उद्यापन करे। उद्यापन के समय यथा शक्ति दान पुण्य का देवें और यदि उद्यापन की शक्ति न हो तो दूना व्रत करे।

इस व्रत के फल से यह तेरी कन्या यहाँ से मरण करके तेरे ही घर अर्ककेतु नाम का पुत्र होगा और उनसे छोटा चन्द्र केतु होगा सो चन्द्रकेतु युद्ध में मरकर पीछे अर्ककेतु का पुत्र होगा पश्चात् अर्ककेतु कितने काल राज्य करके अन्त में माता सहित जिनदीक्षा लेगा सो समाधि मरण करके बारहवें स्वर्ग में महर्दिक देव होगा और फिर मनुष्य भव लेकर तप के योग से केवलज्ञान को प्राप्त हो मोक्ष पद प्राप्त होगा। इसकी माता विजयवल्लभा प्रथम स्वर्ग में देवी होगी। चन्द्रकेतु का जीव भी अवसर पाकर सिद्ध पद को प्राप्त करेगा। इस प्रकार राजा व्रत की विधि और उसका फल सुनकर घर आया और उसकी कन्या ने यथाविधि व्रत पालन करके श्री गुरु के कथनानुसार उत्तमोत्तम फल प्राप्त किये। इस प्रकार और भी जो स्त्री पुरुष श्रद्धा सहित इस व्रत को पालन करेंगे वे भी इसी प्रकार विशद फल पायेंगे।

**श्रावण द्वादशी व्रत कियो, शीलव्रती चित्त धार।**

**किये अष्ट विधि नष्ट सब, लह्यो सिद्ध पद सार।।**

- ब्र. सपना दीदी (संघस्थ)

## काञ्जिका द्वादशी व्रत विधि

काञ्जी द्वादशी व्रत के दिन भगवान वासुपूज्य स्वामी की पूजा, अभिषेक और स्तुति की जाती है। नित्य नैमित्तिक पूजा-पाठों के अनन्तर गाजे-बाजे के साथ भगवान वासुपूज्य स्वामी की पूजा करनी चाहिए।

इस व्रत में चार बार तीन संध्याओं में ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्रूं श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः स्वाहा, इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इस व्रत की सामान्य विधि अन्य व्रत के समान ही है, परन्तु विशेष यह कि यदि श्रवण नक्षत्र त्रयोदशी को पड़ता हो या एकादशी में ही आ जाता हो तथा द्वादशी को श्रवण नक्षत्र का अभाव हो तो द्वादशी के व्रत के साथ श्रवण नक्षत्र के दिन भी व्रत करना चाहिए। यों तो प्रायः द्वादशी तिथि को श्रवण आ ही जाता है ऐसा बहुत कम होता है, जब श्रवण एक दिन आगे या एक दिन पीछे पड़ता है। द्वादशी व्रत के लिए छह घटी प्रमाण होने पर ही ग्राह्य है। यदि कभी ऐसी परिस्थिति आये कि श्रवण द्वादशी में श्रवण नक्षत्र न मिले तो उस समय अस्तकालीन तिथि भी ग्रहण की जा सकती है। द्वादशी को प्रातःकाल में श्रवण नक्षत्र का होना आवश्यक नहीं है। किसी भी समय द्वादशी और श्रवण नक्षत्र का योग होना चाहिए। ज्योतिषशास्त्र में भाद्रपद शुक्ला द्वादशी और श्रवण नक्षत्र के योग को बहुत श्रेष्ठ बताया है। द्वादशी तिथि को यों तो अनुराधा नक्षत्र श्रेष्ठ माना जाता है, परन्तु भाद्रपद मास में श्रवण ही श्रेष्ठतम बताया है। इस कारण श्रवण से संयुक्त द्वादशी कल्याणप्रद, पुण्यकारक और जीवन मार्ग में गति देने वाली होती है।

काञ्जी द्वादशी व्रत का माहात्म्य जैनियों में भी बहुत अधिक माना गया है। इस व्रत को प्रायः सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपनी सौभाग्य-वृद्धि, सन्तान प्राप्ति तथा अपनी ऐहिक मंगलकामना से करती हैं। इस व्रत की अवधि बारह वर्ष तक मानी गयी है, बारह वर्ष तक विधिपूर्वक व्रत करने के उपरांत व्रत का उद्घापन करना चाहिए।

संकलन : मुनि विशाल सागर जी

# कांजी द्वादशी व्रत पूजा विधान

मंगलाचरण

मंगलमय अरहंत हैं, मंगलमय जिन सिद्ध ।  
मंगलमय आचार्य हैं, पाठक जगत प्रसिद्ध॥  
सर्व साधु मंगल कहे, मंगलमय जिन धर्म ।  
जैनागम मंगल परम, नाशी आठों कर्म ॥1॥  
मंगलमय जिन बिम्ब हैं, मंगलमय शिवधाम ।  
नव देवों को भाव से, करते विशद प्रणाम॥  
आदिनाथ जिनवर प्रथम, अन्तिम हैं महावीर ।  
परंपरा में संत कई, ज्ञानी हुये सुधीर॥2॥  
कुन्दकुन्दाम्यनाथ में, हुये अनेक मुनीश ।  
सुधी रत्न भूषण गुरु, पावन हुये ऋशीष॥  
केशवसेन ऋषिवर हुये, जिनके शिष्य महान् ।  
कांजी द्वादश व्रत शुभम्, रचना किये प्रधान॥3॥  
संस्कृत भाषा में लिखा, पावन परम् विधान ।  
श्रेष्ठ ऋद्धियों का किये, ऋषिवर जी गुणगान॥  
कांजी बारस व्रत महा, करते जो भवि जीव ।  
ऋद्धि सिद्धियाँ प्राप्त कर पावें पुण्य अतीव॥4॥  
भादव शुक्ला द्वादशी, करते हैं उपवास ।  
विघ्न दूर होते सभी, बनें शत्रु भी दास ॥  
शुद्ध चित्त को धारकर, करते व्रत प्रारंभ ।  
विषयों से मुख मोड़कर, तजें सर्व आरम्भ ॥5॥  
करते बारह वर्ष तक, उद्यापन फिर जान ।  
यथा शक्ति मण्डल रचें, पूजा करें विधान ॥  
बारह वस्तू भेंट कर, करें चतुर्विध दान ।  
कार्य सभी ऐसे करें, बढ़ें धर्म श्रद्धान ॥6॥

देश राष्ट्र और जाति का, होवे अति सम्मान ।  
उद्यापन न कर सके, तो व्रत दूना होय ।  
विशद शास्त्र का यह कथन, रहा प्रमाणिक सोय॥  
इत्याशीर्वादः पुष्पाजलिं क्षिपेत्।

## कांजी द्वादशी व्रत पूजा

स्थापना

करे श्रवण द्वादशी सुव्रत जो, वे नर पाए पुण्य निधान ।  
सुख शांती सौभाग्य प्राप्त कर, अन्तिम पावें पद निर्वाण ॥  
व्रताराध्य श्री वासुपूज्य का, करते जो प्राणी गुणगान ।  
अल्पसमय में प्राप्त करें वे, भव्य जीव आतम कल्याण ॥  
दोहा- भक्ती करते भाव से, करते हैं गुणगान ।  
विशद हृदय में आज हम, करते जिन आह्वान ॥  
ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतोद्यापने अर्हन् परमेष्ठन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट्  
आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्  
सन्धिकरणम्।

(तर्जः- माता तू दया करके)

हम भक्ति भाव का जल, अर्चा करने लाए ।  
प्रभु श्रद्धा भक्ती से, तव चरण शरण आए ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥1॥  
ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।  
शीतल चन्दन लेकर, जिन चरण चढ़ाते हैं।  
भव ताप नाश होवे, हम महिमा गाते हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥2॥  
ॐ ह्रीं कांजिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय पद पाने, अक्षत ये लाए हैं ।  
शिव पदवी पाने के, शुभ भाव बनाए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥3॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्री परंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प मनोहर शुभ, अर्चा को लाए हैं ।  
रुज काम नाश करने, चरणों सिरनाए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥4॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह क्षुधा रोग नाशी, नैवेद्य बनाए हैं ।  
हे नाथ चरण में हम, पूजा को आए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥5॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह कर्म द्वारा, जग में भटकाए हैं ।  
यह मोह तिमिर नाशी, पूजा को लाए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥6॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्री परंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों के द्वारा, सदियों से सताए हैं ।  
वह कर्म नशाने को, यह धूप जलाए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥7॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्रीपरंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।



कर्मों का फल प्राणी, इस जग में पाते हैं ।  
हम मुक्ती फल पाने, फल यहाँ चढ़ाते हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥8॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्री परंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं  
निर्वपामीति स्वाहा।

हम पर में खोकर के, निज को विसराये हैं ।  
यह अर्घ्य चढ़ाने को, हम लेकर आए हैं ॥  
श्रावण द्वादशि व्रत कर, हम प्रभु के गुण गाएँ ।  
हे नाथ! आपको हम, शुभ भावों से ध्यायें ॥9॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकाव्रतद्योतनावसरे श्री परंब्रह्मपरमेष्ठभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं  
निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विशद शांति की आश ले, आए आपके द्वार ।  
शांती धारा दे रहे, पाने भव दधि पार ।

शान्तये शांतिधारा

शिव पद पाने के लिए, पूजा करते नाथ।  
पुष्पांजलि कर पूजते, करते हैं गुणगान ॥  
दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

## अष्टदल कमल पूजा

दोहा- अष्ट ऋद्धि पाते प्रभू, तीर्थकर भगवान ।  
पुष्पांजलि कर पूजते, चरण झुकाते माथ॥

प्रथमवल्लोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत्

(ज्ञानोदय छन्द)

बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, कहे गये आगम अनुसार ।  
ज्ञान विशिष्ट प्रगट होता है, जिसके द्वारा मंगलकार ॥

उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान॥  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥1॥

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप ऋद्धी के धारी मुनिवर, कर्म निर्जरा करें विशेष ।  
जिनके चरणों जाति विरोधी, जीव बैठते साथ अशेष ॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥2॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणिमा महिमा आदि एकादश, ऋद्धि विक्रिया है शुभकार।  
उर में हो आनंद सभी के, पाले जो पावन आचार ॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान॥  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥3॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके चरणोदक का भाई, तन में होने से स्पर्श ।  
ऋद्धि विक्रिया धारी मुनि का, दर्शन करके होवे हर्ष ॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥4॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विचरण करते जल थल नभ में, बाधा रहित संत अनगार।  
चारण ऋद्धी धारी मुनिवर, कहे लोक में विस्मयकार ॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥5॥

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापराक्रम बल ऋद्धीधर, रत्नत्रय धारी ऋषिराज ।  
काय वचन मन बल त्रय ऋद्धी, धारी तारण तरण जहाज॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥6॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रुक्षाहार बने विष अमृत, जिनके कर में हो स्वादिष्ट ।  
रस ऋद्धीधर मुनि की पूजा, से टलते हैं सभी अनिष्ट ॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥7॥

ॐ ह्रीं रसऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस गृह में आहार करें मुनि, अन्न वहाँ न होवे क्षीण ।  
अक्षीण महानश और महालय, ऋद्धीधर मुनि राग विहीन॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥8॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस-ऋद्धिधारक-सर्वऋषीश्वरेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

बुद्धि विक्रिया औषधि चारण, तप रस बल शुभ ऋद्धीवान।  
है अक्षीण महानस ऋद्धी, पूजें हो जीवन उत्थान॥  
उद्यापन कर कांजी व्रत का, अर्घ्य चढ़ाते महति महान।  
रोग शोक भय कष्ट निवारण, हो जाए करके गुणगान ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टप्रकारऋद्धिधारक-सर्वमुनीश्वरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इति अंतपरिधिमध्ये अष्ट प्रमित कमलकर्णिका पूजन।

## प्रथम कोष्ठे बुद्धि-ऋद्धि पूजा

दोहा- बुद्धि ऋद्धि धारी ऋषी, जग में हुए महान।  
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिप्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(चौपाई)

जीवाजीव आदि सब जानो, सुने अर्थ युत युग पद मानो।  
संभिन्न श्रोतृत्व ऋद्धिधर भाई, बोलें श्रेष्ठ शब्द सुखदायी॥1॥

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि प्रथमभेद संभिन्नश्रोतृ ऋद्धिधारकमुनिश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**काव्य स्तोत्र आदि शुभकारी, नये बनावें क्षण में भारी ।**

**बुद्धि ऋद्धिधारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए ॥2॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि द्वितीयभेद काव्यादिरचना कृत्रित्वगुण प्राप्तेभ्यो मुनिश्वरेभ्यो  
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

**मिथ्यावादी जो भी आवें, स्याद्वाद कर सभी हरावें ।**

**बुद्धि ऋद्धि धारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए॥3॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि तृतीयभेद परवादिन वादे जेतुशील बुद्धिऋद्धिधारक ऋषिश्वरेभ्यो  
अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**मैत्री पूर्ण सदा उपकारी, वचन बोलते मुनि भयहारी ।**

**बुद्धि ऋद्धि धारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए॥4॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि चतुर्थभेद सर्वेषां मैत्र्यादिभावोत्पादक ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं  
अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**हितमित वचन बोलते भाई, मुनिवर आगम के हितदायी ।**

**बुद्धि ऋद्धिधारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए॥5॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि पंचमभेद हितमितप्रमाणीक वचनोत्पादक ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**दशम पूर्व का ज्ञान जगावें, यह विद्यार्थे मुनिवर पावें।**

**बुद्धि ऋद्धिधारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए॥6॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि षष्ठमभेद दशपूर्वज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**ज्ञान पूर्व चौदह का पावें, अर्थ वेद का पूर्ण जगावें ।**

**बुद्धि ऋद्धिधारी मुनि गाए, सारे जग में पूज्य कहाए॥7॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि सप्तमभेद चतुर्दश पूर्वज्ञान प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वाहा।

**स्वप्न और शकुनादिक जानो, होनहार बतलावें मानों॥**

**मुनि अष्टांग निमित्तक ज्ञानी, ऋद्धिधारी जग कल्याणी ॥8॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धिप्रभावेन अष्टांगनिमित्तज्ञानशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

**बुद्धि ऋद्धिधारी मुनि गाए, आठ भेद जिसके बतलाए ।**

**प्राणी जिनका ध्यान लगाएँ, वे जीवन में शांति पाएँ॥9॥**

ॐ ह्रीं बुद्धिऋद्धि अष्टभेदयुक्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- बुद्धि ऋद्धिधारी ऋषी, गाए मंगलकार।  
रोग शोक भय आपदा, पूजा से हो क्षार ॥  
इत्याशीर्वादः।

## द्वितीय कोष्ठे तप ऋद्धि पूजा

दोहा- कर्म निर्जरा हो विशद, तप ऋद्धी को धार ।  
पुष्पांजलि करते यहाँ, पाने भवदधि पार ॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(चाल छन्द)

मुनिवर अनेक विद्याएँ, तप के द्वारा प्रगटाएँ।

तप ऋद्धी महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥1॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन अनेकविद्यानांसमूह-प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

मुनि दिष्टि मुष्टि विद्याएँ, मारण तापन की पाएँ।

तप ऋद्धी महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥2॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन दिष्टिमुष्ट्यादि मारण-पालनशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ग्यारह अंगों के ज्ञाता, तप ऋद्धीधर जग त्राता।

तप ऋद्धी महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥3॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन एकादशाङ्गश्रुतधारकेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

होते मुनि गगन बिहारी, पावन तप ऋद्धी धारी ।

तप ऋद्धी महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥4॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन आकाशमार्गेण व्रजनशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

प्राणी सिंहादिक जानो, सब तजे क्रूरता मानो।

तप ऋद्धी महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥5॥

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन सिंहादिक्रूरजीवानां उपशान्तिकारशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**विष भी निर्विष हो जाए, तप ऋद्धि धर को पाए।**

**तप ऋद्धि महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥6॥**

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन हालाहलेन विषेन ये मृताः तान् निर्विषीकरण शक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**उग्रोग्र सुतप को पाएँ, अविचल मुनि ध्यान लगाएँ।**

**तप ऋद्धि महिमा कारी, पूजें सुर नर नभचारी॥7॥**

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन उग्रोग्रसुतप प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।--

**कांती मुनि तन में जानो, कोटिक रवि सम हो मानो।**

**है तप की ये प्रभुताई, जग जीवों को शिवदायी॥8॥**

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन तपश्चरणधारकशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**हो तप्त स्वर्ण समभाई, तप से मुनि तन सुखदायी।**

**है तप की यह प्रभुताई, जग जीवों को शिवदायी ॥9॥**

ॐ ह्रीं तपऋद्धिप्रभावेन दिगम्बरोपि मुनिः तप्तहेम-कांतिसदृशो-भवेत् एतादृशी तपऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

**मुनि पक्ष मास षडमासी, वर्षों के हों उपवासी।**

**है तप की यह प्रभुताई, जीवों को शिवदायी ॥10॥**

ॐ ह्रीं षष्ठाष्टदिपक्षमासषण्मास-वर्षांत तपःशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.स्वा.।

**दोहा- तप के द्वारा प्रगट हो, मुनि के ऋद्धि अनूप।**

**निज आतम का ध्यान कर, पावें निज स्वरूप॥**

इत्याशीर्वादः।

## **तृतीय कोष्ठे विक्रया ऋद्धि पूजा**

**दोहा- ऋद्धि विक्रिया वान की, महिमा का ना पार ।**

**संयम तप से प्रगट हो, धार सके तो धार ॥**

ॐ ह्रीं विक्रिया ऋद्धि प्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(शम्भू छन्द)

अणु प्रमाण तन होवे मुनि का, आक तंतु पर आशनवान।  
बाधा ना हो किसी जीव को, अणिमा ऋद्धी बड़ी महान॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥1॥

ॐ ह्रीं अणुप्रमाणंशरीरं करोतीति विक्रियाऋद्धि प्राप्तेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसके द्वारा मेरु बराबर, करें देह का ऋषि निर्माण ।  
लेश मात्र भी बाधा ना हो, महिमा ऋद्धी कही महान ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥2॥

ॐ ह्रीं मेरुप्रमाण दीर्घ शरीरं करोतीति विक्रियाऋद्धि प्राप्तेभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्क तूल सम देह बनाते, फिर भी होवे महिमावान।  
रहित पूर्ण बाधाओं से हो, लघिमा ऋद्धी कही महान ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥3॥

ॐ ह्रीं अर्कतूलसदृशातिसूक्ष्म शरीरं करोतीति विक्रियाऋद्धि प्राप्तेभ्योर्घ्यं नि. स्वाहा।

सूक्ष्म शरीर धारते ऋषिवर, फिर भी अतिशय शक्तिवान ।  
गरिमा ऋद्धी धारी मुनिवर, गाए जग में महति महान ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥4॥

ॐ ह्रीं गिरीशसदृशाति-उच्चशरीरं करोतीति विक्रियाऋद्धि प्राप्तेभ्योर्घ्यं नि. स्वाहा।

रूप धारते हैं मनवांछित, बहू रूपणी ऋद्धीवान ।  
जो चाहें सो रूप बनावें, ऐसा कहते हैं विद्वान ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥5॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धि प्रभावेन बहुरूपकृतशक्तिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

उत्तम तप के धारी ऋषिवर, तीन लोक के होते ईश ।  
परमैश्वर्य धारने वाले, ईशत्व ऋद्धिधार ऋशीष ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वोपरि ऐश्वर्यऋद्धि दर्शयतीति शक्तिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

देव पशू मानव या दानव, जिनके दर्शन करें महान ।  
सबके वल्लभ धर्म गुणों के, ऋद्धि वशित्वधारी गुणवान ॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥7॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिप्रभावेन मनुष्यतिर्य्यच-देवदानवादि वशीकरणऋद्धि-प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

महापराक्रम बल के धारी, शौर्य प्रगट करते गुणवान।  
मेरु आदि कंपित होते हैं, मुनिवर हों ऐसे बलवान॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥8॥

ॐ ह्रीं विक्रियाऋद्धिप्रभावात् बलपौरुषपराक्रमेषु अत्यन्तशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अणिमा महिमा आदिक ऋषिवर, अष्ट ऋद्धिधारी ऋषिराज।  
ऋद्धि विक्रिया के धारी पद, शीश झुकाते हैं हम आज॥  
सुर नर विद्याधर आकर के, भक्ती से करते गुणगान।  
विशद कांजि व्रत धारी करते, करने आतमा का कल्याण ॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टभेदेनसह विक्रियाऋद्धि प्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दोहा- ऋद्धि विक्रिया धारते, हैं ऋषिवर अनगार ।  
जिनकी अर्चा से विशद, प्राणी हों भवपार ॥

इत्याशीर्वादः।



दोहा- औषधि ऋद्धी का यहाँ, करते हैं गुणगान।  
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाके पुण्य निधान॥  
ॐ ह्रीं औषधि ऋद्धि प्राप्ताय पुष्पांजलिं क्षिपामि।

## अथ चतुर्थ कोष्ठे औषधि ऋद्धि पूजा

(नरेन्द्र छन्द)

किसी तरह का रोग जीव के, सिर में हो जावे।  
गुण वारिधि ऋषिवर का दर्शन, कर कर ना रह पावे॥  
औषधि ऋद्धीधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥1॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

उदर शूल महारोग आदि कोइ, तन में यदि हो जावे।  
कर स्पर्श मुनी के तन का, नहीं रोग रह पावे ॥  
औषधि ऋद्धीधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥2॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावात् शिरोरोगनिवर्तनशक्तिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निः।

दृष्टि रोग बलवान कहा है, पत्थर जिससे दूटे।  
औषधि ऋद्धी धारी मुनि के, देखत भव से छूटे ॥  
औषधि ऋद्धीधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥3॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावात् विशूचिका शूलोदर आदि-रोगान् क्षणं नाशयतीति  
औषधि ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निः।

नेत्र रोग अति क्रूर है भाई, अन्धे सम कर जावे ।  
मुनि औषधि ऋद्धी प्रताप से, दृष्टी स्वच्छ बनावे॥  
औषधि ऋद्धीधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥4॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावेन जराद्वित्रीणि अज्ञानानि कर्मरोगान् शांतिं नयतीति

औषधि-ऋद्धि-प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

कर्ण रोग बलवान लोक में, जिससे सुन ना पावे।  
औषधि ऋद्धि के प्रताप से, सुनने में सब आवे ॥  
औषधि ऋद्धि धारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥5॥

ॐ ह्रीं नेत्रादीनां रोगाणां क्षयंकरोतीति औषधिऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

रोग जलोदर कृमि आदिक भी, देह में तीव्र सतावें ।  
औषधि ऋद्धि धारी मुनि के, दर्श से वह भग जावें॥  
औषधि ऋद्धि धारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥6॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावेन कर्णरोगनिरोधनशक्तिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

अति खांसी हिचकी या श्वाँस हो, हृदय में धड़कन होवे।  
क्षण में रोग नाश हो जाये, अंग में फड़कन खोवे॥  
औषधि ऋद्धि धारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥7॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावेन शूलोदरादि-उदर-व्यथा-निराकरण शक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

नख केसादिक या खकार हो, मुनि का स्वेद पड़ जावे ।  
मुनि तन से स्पर्शित रज से, रोग नहीं रह पावे ॥  
औषधि ऋद्धिधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।  
विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥8॥

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्रभावेन हिक्का-श्वास-काश गलग्रहणादि हृदयोत्पन्नरोगान् शान्ति नयतीतिशक्ति प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

औषधि ऋद्धि के धारी मुनि, रहें जहाँ पर भाई ।  
आधि व्याधियाँ नाश होंय सब, है मुनि की प्रभुताई ॥

**औषधि ऋद्धीधारी ऋषि की, पूजा महिमाकारी ।**

**विशद भाव से करते हैं हम, आज यहाँ शिवकारी ॥9॥**

ॐ ह्रीं औषधिऋद्धिप्राप्तसत्येषां शरीरोत्पन्नस्वेदादिकेन स्पर्शनेन रोग-  
प्रशान्तिशक्तिप्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति।

दोहा- **औषधि ऋद्धीधार ऋषी, जग में हुए महान ।**

**जिनका करते आज हम, भाव सहित गुणगान ॥**

इत्याशीर्वादः।

## **अथ पंचम कोष्ठे चारण ऋद्धि पूजा**

दोहा- **ऋद्धी चारण धर ऋषी, जग में कहे महान ।**

**गगनादिक में जो चले, होय ना कोई हान ॥**

ॐ ह्रीं चारणऋद्धिप्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(मोतियादाम)

**लगाएँ जंघा से जो हाथ, चलें भू से ऊँचे मुनिनाथ।**

**ऋषी चारण ऋद्धी को धार, गगन में करते स्वयं बिहार ॥1॥**

ॐ ह्रीं जंघाचारणऋद्धिप्राप्तेभ्यो मुनिभ्यो अर्घ्यं निः।

**चलें जल में थल सम ऋषिराज, हिलें ना जीव न होवे घात।**

**ऋषी जल चारण ऋद्धीवान, रहे जो विशद गुणों की खान ॥2॥**

ॐ ह्रीं जले परिसंचारनामऋद्धिप्राप्तेभ्यो मुनिभ्यो अर्घ्यं निः।

**ऋषी की हो पत्रों पर चाल, पत्र के जीव ना हों बेहाल ।**

**पत्र चारण मुनिऋद्धीवान, रहे जो विशद गुणों की खान॥3॥**

ॐ ह्रीं हरितेतरपत्रोपरिसंचारनाम ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निः।

**ऋषी फूलों पर चलें विशेष, फूल के जीव ना हिलें अशेष।**

**पुष्प चारण ऋषि ऋद्धीवान, रहे जो विशद गुणों की खान ॥4॥**

ॐ ह्रीं कुसुमोपरिसंचारनाम ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निः।

चलें मुनिवर तंतू पर चाल, जीव ना हों उसके बेहाल ।

तंतु चारण ऋषि ऋद्धीवान, रहे जो विशद गुणों की खान ॥5॥

ॐ ह्रीं तंतुसंचारनामऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

चलें थल से नभ तक मुनिनाथ, नहीं जीवों का होवे घात।

ऋद्धि थल नभस्चारिणी जान, रहे जो विशद गुणों की खान॥6॥

ॐ ह्रीं ऋद्धिथलनामऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

धरा पर पैर उठाते जाएँ, जीव ना कोई बाधा पाएँ ।

भूमि पे मानव वत् संचार, ऋद्धि पावें मुनिवर अनगार ॥7॥

ॐ ह्रीं भू-पीठात् अन्तरिक्षसंचारनामऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

ऋषी बैठे ही करें बिहार, ऋद्धि की महिमा अपरम्पार ।

ऋद्धि उप विष्टोपि संचार, प्राप्त करते हैं तप को धार ॥8॥

ॐ ह्रीं उपविष्टोपि संचारनामऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि.।

भेद चारण ऋद्धी के आठ, प्राप्त कर होते ऊँचे ठाठ।

पूजते ऋषिवर के पद आज, कहे जो तारण तरण जहाज॥9॥

ॐ ह्रीं अष्टभेदांश्चारणऋद्धि प्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि.।

दोहा- तीन लोक में पूज्य हैं चारण ऋद्धीवान।

अर्चा करते भाव से, जिनकी यहाँ महान ॥

इत्याशीर्वादः।

## अथ षष्ठम कोष्ठे बल ऋद्धि पूजा

दोहा- बल ऋद्धी को धारते, उत्तम तप से संत ।

शिव पथ के राही बनें, पाने मुक्ती पंथ ॥

ॐ ह्रीं बलऋद्धिप्राप्तेभ्यो मुनिभ्यो पुष्पांजलि क्षिपामि।

(जोगीरासा छन्द)

महामत्त गज से भी बढ़कर, अतुल शक्ति के धारी।

उथल पुथल कर सकते जग में, बल ऋद्धीधर भारी॥

ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥1॥

ॐ ह्रीं गजेन्द्रात् अधिक बलऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् नि.

केहरि से बलवान अधिक हैं, ऋषि बल ऋद्धीधारी।  
बल ऋद्धी का है प्रताप यह, पावें ऋषि अनगारी ॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥2॥

ॐ ह्रीं सिंहादिक बलऋद्धिनाम प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषि कोटी भट से बलशाली, होते ऋद्धीधारी ।  
बल ऋद्धी के धारी मुनिवर, गाए मंगलकारी ॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥3॥

ॐ ह्रीं कांजिव्रतोद्यापने कोटिभटानां अधिकबल-प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विद्याधर से भी बलशाली, विद्याबल से होवें।  
विशद साधना करके ऋषिवर, कर्म शृंखला खोवें॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥4॥

ॐ ह्रीं विद्याधरादपि अधिक-बल-प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

केशव अधिपति तीन खण्ड के, इनसे से भी बलशाली।  
ऋद्धी बल से ऋषिवर देते, हैं जग को खुशहाली॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥5॥

ॐ ह्रीं केशवात् अधिक-बल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चक्रवर्ति ने निज बल से कई, जीते देश हैं सारे।  
इनसे अधिक प्रतापी ऋषिवर, होते संत हमारे॥

ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥6॥

ॐ ह्रीं चक्रवर्त्याधिकबल ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकायों के देवों से, भी बलशाली गए।  
ऋषिवर ऋद्धी के प्रताप से, जगत पूज्यता पाए॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥7॥

ॐ ह्रीं चतुर्निकायदेवेभ्योऽप्यधिक-बल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

सौधर्मादिक इन्द्रों से भी, अधिक शक्ति ऋषि पावें।  
बल ऋद्धीधारी ऋषिवर के, आगे सब झुक जावें॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥8॥

ॐ ह्रीं सुरेशादपि अधिक-बल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अहमिन्द्रों से अधिक शक्ति ऋषि, पूर्व पुण्य से पाते।  
संयम की शक्ती से मुनिवर, जग में पूजे जाते ॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥9॥

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रादपि अधिक-बल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य मिलाए, हम ये अर्घ्य बनाये।  
बल ऋद्धी धारी ऋषिवर, की पूजा करने आए॥  
ऋद्धीधर मुनिवर के दर्शन, जग में मंगलदायी।  
कांजी बारस व्रत की अर्चा, करते हैं हम भाई॥10॥

ॐ ह्रीं बल-ऋद्धिप्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- बल ऋद्धीधारी ऋषी, करते निज का ध्यान ।  
उनके प्रबल प्रताप से, पावें सम्यक ज्ञान ॥

इत्याशीर्वादः।

## अथ सप्तम कोष्ठे रस ऋद्धि पूजा

दोहा- रस ऋद्धिधारी ऋषी, जग में कहे महान ।

पुष्पांजलि करके विशद, करते हम गुणगान ॥

ॐ ह्रीं रस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(शम्भू छन्द)

सर्व रसों में इक्षू रस शुभ बल दायक अरु मिष्ट रहा।

कर में रस ऋद्धिधारी के, नीरस भी स्वादिष्ट अहा॥

रस ऋद्धि के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥1॥

ॐ ह्रीं रस ऋद्धिमध्ये इक्षुरसोत्पादकशक्तिप्राप्तेभ्यो मुनिभ्यो अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

रूखा सूखा भोजन बनता, बल दायक रस युक्त महान।

पवन रस ऋद्धि के धारी, मुनिवर गाए महिमावान ॥

रस ऋद्धि के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥2॥

ॐ ह्रीं सूपोत्पादक रसऋद्धि-प्राप्तेभ्यो मुनिभ्यो अर्घ्यम् नि. स्वाहा।

दूध रहित भोजन बन जाए, मधुर दुग्ध संयुत रसवान।

उत्तम तप की महिमा है यह, ऋद्धि प्रगट हो जाये महान॥

रस ऋद्धि के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥3॥

ॐ ह्रीं दुग्ध-रसोत्पादक रसऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

जिस भोजन में दधि ना होवे, फिर भी होवे दधि समान।

यह माहात्म ऋद्धिधारी ऋषि, की ऋद्धि से होय प्रधान ॥

रस ऋद्धि के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।

अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥4॥

ॐ ह्रीं दधिरसमुत्पादक रसऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।

तेल रहित भोजन हो जाए, ऋषि के कर में तेल संयुक्त।  
मुनिवर वह भी नहीं चाहते, रहते हर आशा से मुक्त ॥  
रस ऋद्धी के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।  
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥5॥

ॐ ह्रीं तेलरसऋद्धि प्राप्तेभ्यो मुनीभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

नमक हीन भोजन हो जाए, क्षार युक्त भोजन स्वादिष्ट ।  
कही क्षार रस ऋद्धी पावन, हरने वाली सभी अनिष्ट ॥  
रस ऋद्धी के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।  
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥6॥

ॐ ह्रीं क्षाररसोत्पादक ऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हो विषाक्त भोजन भी कोई, अमृत वत् ऋषि कर में होय।  
ऋद्धी बल का है प्रभाव यह, जिससे विष भी विषता खोय॥  
रस ऋद्धी के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।  
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥7॥

ॐ ह्रीं अमृतदृशरसोत्पादक रसऋद्धिप्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान शुभ भाव प्राप्त हो, धर्म के प्रति होवे अनुराग ।  
उत्तम तप से धर्म प्रगट हो, जिससे बुझे राग की आग॥  
रस ऋद्धी के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।  
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥8॥

ॐ ह्रीं धर्मानुरागरसऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

रस ऋद्धी को पाने वाले, जगत पूज्य हैं संत महान ।  
जल फल आदिक अष्ट द्रव्य से, करते हम जिनका गुणगान ॥  
रस ऋद्धी के धारी ऋषिवर, मम विघ्नों का करें विनाश।  
अष्ट द्रव्य से पूजा करते, होवे पावन ज्ञान प्रकाश॥9॥

ॐ ह्रीं काञ्जीकायाः व्रतोद्यापने रसऋद्धिप्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।



दोहा- रस ऋद्धीधारी ऋषी, जग में पूज्य त्रिकाल।  
जिन की अर्चा से कटे, बना कर्म का जाल ॥

इत्याशीर्वादः।

## अथ अष्टम कोष्ठे अक्षीण महानस ऋद्धी पूजा

दोहा- अक्षीण महानस ऋद्धि के, धारी श्री ऋषिराज ।  
कहलाए जो लोक में, तारण तरण जहाज॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस ऋद्धि प्राप्तेभ्यो पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(दोहा)

जल के बिन्दू ही विशद, निकलें जिस स्थान ।

ऋद्धीधर मुनि हो वहाँ, झरना बहे महान ॥1॥

ॐ ह्रीं नीरयुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऊजड़ बजरं भूमि हो, जो बिलकुल बे काम ।

ऋद्धी बल से उस जगह, दीखें रत्न ललाम ॥2॥

ॐ ह्रीं रत्नयुतम् अक्षीणमहानसऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्यर्थ पड़ी हो भू जहाँ, वहाँ निकलती खान ।

है प्रताप शुभ ऋद्धि का, होवे लाभ महान ॥3॥

ॐ ह्रीं खानयुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पत्थर आदिक युक्त भू, होवे जो बेकार ।

सोना चाँदी युक्त हो, ऋद्धी से मनहार ॥4॥

ॐ ह्रीं स्वर्णरजतयुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वधातु में श्रेष्ठ है, पारा जिसका नाम।

कभी क्षीण होवे नहीं, यति हों जहाँ ललाम॥5॥

ॐ ह्रीं पारदयुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धातु गलाने का सदा, करती है जो काम।

वही धातु अक्षीण हो, मुनिपद से अभिराम ॥6॥

ॐ ह्रीं रांगायुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निधियाँ जो चक्रेश की, मिल जाएँ शुभकार ।

कभी क्षीण होवे नहीं, ऋषि हों ऋद्धीधार ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्वनिधियुतम् अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धी के आधार से, भोजन होय अपार।

तिष्ठें जिस गृह में ऋषी, हो अटूट भण्डार ॥8॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहालय-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋद्धि महानस के विशद, बतलाए यह भेद।

ऋषि की अर्चा से सभी, मिटते मन के खेद॥9॥

ॐ ह्रीं अक्षीणमहानस-ऋद्धि प्राप्तेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अक्षीण महानस ऋद्धिधर, करते जहाँ विहार ।

उन स्थानों पर सदा, भरा रहे भण्डार ॥

इत्याशीर्वादः।

## जयमाला

दोहा- अष्ट ऋद्धियों के यहाँ, भेदों का गुणगान ।

भाव सहित हमने किया, करते अब जयगान ॥

(ज्ञानोदय छन्द)

छियालिस मूलगुणों के धारी, दोष अठारह रहित महान ।

कर्म घातिया से विरहित हैं, जगत् पूज्य अर्हत् भगवान ॥

अष्ट महागुण के धारी हैं, सिद्ध सनातन मंगलकार ।

परमेष्ठी आचार्य पालने, वाले गाये पञ्चाचार ॥1॥

उपाध्याय पच्चिस गुणधारी, पाठक होते हैं अनगार ।

रत्नत्रय के धारी साधू, करें साधना अपरम्पार ॥

महा तपस्या करने वाले, करते अपने कर्म विनाश।  
 अनायास ही श्रेष्ठ ऋद्धियाँ, प्रगटित होतीं जिनके पास ॥2॥  
 बुद्धि ऋद्धि को पाने वाले, ऋषिवर पाते अनुपम ज्ञान ।  
 अंग पूर्व का ज्ञान प्राप्त कर, करते हैं जो जग कल्याण ॥  
 उग्र-उग्र तप करने वाले, मुनि को तप ऋद्धि हो प्राप्त ।  
 विष अमृत बन जाता कर में, जिन मुनीन्द्र के अपने आप॥3॥  
 मुनी विक्रिया ऋद्धीधारी, मन वांछित करते स्वरूप ।  
 हल्का भारी गुरु लघु भाई, मुनिवर स्वयं बनावें रूप॥  
 औषधि ऋद्धी के प्रभाव से, जीवों पर करते उपकार ।  
 रोग शोक संताप आदि का, मुनिवर करते हैं परिहार ॥4॥  
 चारण ऋद्धीधारी ऋषिवर, थल वत् जल में करें विहार।  
 या आकाश में विचरण करते, ऋद्धी पा मुनिवर निराधार॥  
 बल ऋद्धी के धारी ऋषि के, आगे योद्धा मानें हार ।  
 वीर्यवान हो जाते ऋषिवर, शक्ति का ना रहता पार ॥5॥  
 प्रगट होय रस ऋद्धी जिनको, नीरस भोजन भी रसवान ।  
 उन ऋषियों के कर में भाई, हो जाता है महति महान ॥  
 ऋषि अक्षीण महानस धारी, का होता है जहाँ गमन ।  
 भरते हैं भण्डार द्रव्य के, हो जाता है वहाँ चमन ॥6॥  
 यह सब मुनिवर के प्रताप से, हो जाता है अपने आप ।  
 'विशद' साधना करने वाले, ऋषियों के कट जाते पाप ॥  
 भव सिन्धू में पड़े हुए हैं, दुख भोगे हैं अपरम्पार ।  
 यही भावना भाते हैं हम, भव सिन्धू से पाएँ पार ॥7॥  
 दोहा- अष्ट ऋद्धिधारी ऋषी, तिष्ठें जिस स्थान ।

आधि व्याधियों का वहाँ, रहे ना नाम निशान ॥

ॐ ह्रीं काञ्जिकायाः व्रतोद्योतने अष्ट ऋद्धिधारक सर्वऋषीश्वरेभ्यो जयमाला  
 पूर्णाध्व्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन अर्चा करके विशद, ऋद्धि सिद्धि हो प्राप्त।

अनुक्रम से वे जीव सब, बन जाते हैं आस ॥

इत्याशीर्वादः।

## प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी  
संघस्थ परम्परायां श्री आदिसागरायचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति  
आचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री विमलसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री  
भरतसागराचार्य, श्री विरागसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री विशदसागराचार्य  
जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्त श्रीशान्तिनाथ  
दिगम्बर जैन मंदिर मालवीयनगर, जयपुर वीर निर्वाण संवत् 2542 कार्तिकमासे  
शुक्लपक्षे सप्तमी बुधवासरे श्री कांजीद्वादसव्रतविधान रचना समाप्तं इति शुभं  
भूयात्।

## आचार्य विशदसागर जी पूजन

(स्थापना)

वीर प्रभु के अनुयायी तुम, विशद सिंधु आचार्य प्रवर।  
विराग सिंधु से दीक्षा पाए, शिव पथगामी हे गुरुवर॥  
इन गुरु शिष्य की गरिमा से यह, हर्षाया सारा अम्बर।  
परम पूज्य गुरुवर का अनुपम, जयकारा गूंजा घर-घर॥  
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।  
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करें स्थापना हम तेरी॥

ॐ हूँ आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति  
आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव  
वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

गंगा में डुबकी लगा-लगा, अपने को पावन बतलाया।  
अब कर्म कलंक मिटाने को, गुरु चरणों में जल ले लाया॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय  
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की पूजा से सचमुच, मम हृदय कली खिल जाती।  
चन्दन से पूजा भवाताप, को दूर हटा सुख दिलवाती॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय  
चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु शुभ, जहाँ से गुरु के कदम बढ़े।  
उस जनम क्षेत्र के कण-कण को, मेरे यह अक्षत पुंज चढ़े॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान्  
निर्वपामीति स्वाहा।

बागों से चुन-चुनकर सुरभित, पुष्पों के थाल सजाए हैं।  
निज काम बाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण शरण में आए हैं॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं  
निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, यह शुभ पकवान बना लाए।  
अब निज की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने को आये॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं  
निर्वपामीति स्वाहा।

हम रत्न जड़ित घृत के दीपक, यह चरण शरण में लाये हैं।  
मिट जाये अब अज्ञान तिमिर, गुरु चरणों में हम आये हैं॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं  
निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूपदान में धूप जलाएँ, दश दिश धूप उड़े भारी।  
बहु जनम-जनम के संचित भी, कर्मों की पूर्ण जले क्यारी॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. स्वाहा।

शुभ मोक्ष सुफल की चाह में गुरु ने पञ्च महाव्रत को व्रत पाया।  
प्रभुवर के बनकर लघुनन्दन, शुभ मोक्ष मार्ग को अपनाया॥  
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं  
निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।  
गुरु भक्ति हम कर सकते बस, दुर्गीति का सहज निवारण है॥

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु, की नितप्रति पूजा करते हैं।  
इस जग के पूजक पुण्याश्रव, कर श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं॥  
ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं  
निर्वपामीति स्वाहा।

### जयमाला

दोहा - विशद गुरु की भक्ति ही, मम जीवन आधार।  
युगों-युगों तक हम नहीं, भूलेंगे उपकार॥

चौपाई

जयवंतो गुरुदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।  
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे॥  
ग्राम कुपी जग में अलबेला, नाथूराम घर लगा था मेला।  
माँ इंदर के प्यारे नंदा, अपने घर के तुम हो चंदा॥  
नाम रमेश आपका गाया, भवि जीवों के मन को भाया।  
आप गये गुरुवर के द्वारे, छोड़ के जग के सभी सहारे॥  
बचपन से ही तुमने पाया, महामंत्र नवकार को ध्याया।  
तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा॥  
श्रद्धा से फिर शीश झुकाया, विराग सिन्धु को गुरु बनाया।  
सन् छियानवे में दीक्षा पाई, आप बने फिर शिव के राही॥  
धन्य द्रोणगिरि कीन्हें गलियाँ, खिलीं त्याग संयम की कलियाँ।  
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हो रखवाले॥  
मालपुरा में टोंक जिला है, गुरुवर का सौभाग्य जगा है।  
बसंत पंचमी का दिन पाये, विशदसिन्धु आचार्य बनाये॥  
परमेष्ठी आचार्य कहाए, भरत सिन्धुजी गुरुवर पाये।  
तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे॥  
पंचाचार आपने धारे, षट् आवश्यक पालन हारे।  
छत्तिस मूल गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी॥

पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।  
गुरुकृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते॥  
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जायें सहारे।  
कई विधान तुमने रच डाले, भक्त जनों के किये हवाले॥  
गुरु के सम्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।  
दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरु कृपा जब रंग दिखाती॥  
हम धरते हैं ध्यान तुम्हारा, जानो सब मन्तव्य हमारा।  
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, गुरु गुण को मैं कैसे बोलूँ॥  
स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, निज दुख की परवाह नहीं है।  
गुरु की भक्ति जो भी करते, कोष पुण्य से वो हैं भरते॥

दोहा - मेरे मन की आस है, 'सपना' हो साकार।

मुक्ती के राही बनें, वन्दन बारम्बार॥

ॐ हूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णाघ्यं  
निर्वपामीति स्वाहा।

अहोभाग्य है मेरा गुरुवर, दर्श करें दो नयनों से।

विशद गुरु का गुण गाएँ हम, तन से मन से वचनों से॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।

- ब्र. सपना दीदी (संघस्थ)

करे पुरुषार्थ जो ज्ञानी, वो शिवपद प्राप्त करता है।

हीन पुरुषार्थ से हैं जो, चैन औरों का हरता है॥

व्यसन व पाप है दुष्मन, यहाँ इन्सानियत के साथ।

जो पापों में रचे मानव, विशद वे मौत मरता है॥